अध्याय- चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण

एवं व्याख्या

अध्याय–चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना :–

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित उद्देश्य के प्राप्ति हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है जो, नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामन्यीकरण रूप से होता है।

"सांख्यिकी पूर्व निश्चित उद्देश्य से सम्बन्धित निष्पक्ष और विधिवत ढंग से जुटाये गये तथ्यों का एकीकरण, सारणीकरण प्रस्तुतीकरण और विश्लेषण करना है।" डब्लू.जी. सलक्लिफ के अनुसार–

4.2 सांख्यिकी की आवश्यकता एवं उपयोगिता

- विस्तृत आंकडों को सरल रूप में व्यक्त करने के लिए।
- शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले नवीन परीक्षणों तथा अनुसधानों को समझने के लिए।
- किन्हीं दो विषयों, क्षेत्रों, संख्याओं या अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए।
- विभिन्न परीक्षणों जैसे (उपलब्धि परीक्षण)ा बुद्धि परीक्षण, अभिरूचि एवं व्यक्तित्व परीक्षण के निर्माण में आवश्यकता होती है।
- परीक्षणों के परिणामों की संख्या ज्ञात करने के लिए आवश्यक होती है।
- सत्यता का बोध कराने हेतु आवश्यक होती है। किसी परीक्षण की रचना के लिए व उसकी विश्वसनीयता के लिए सांख्यिकी का उपयोग किया जाता है।
- शैक्षिक, व्यवसायिक निर्देशन एवं शैक्षिक कुशलता के लिये सांख्यिकी की आवश्यकता होती है।

4.3 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध कार्य में प्रदत्तों के संग्रहण के पश्चात उस पर सांख्यिकी प्रक्रिया करके या प्रदत्तों की वर्णनात्मक व्याख्या कर शोध कार्य के निष्कर्ष को प्राप्त कर सामन्यीकरण किया जाता है।

शोधार्थी द्वारा स्व-रचित प्रश्नावली से प्राप्त आंकडो (प्रदत्तों) के विश्लेषण हेतु मास्टर चार्ट बनाया गया, जिसमें प्राथमिक स्त्रोतों से प्राप्त आंकडों को सरलतम् रूप प्रदान किया गया। तत्पश्चात आँकडों को सारणी रूप में व्यवस्थित किया गया। वर्गान्तर तथा प्रतिशत निकालकर प्रश्न रूपों सहित निष्कर्ष को प्राप्त किया गया एवं परिकल्पना की जाँच उपरान्त उसकी व्याख्या की गई। कुछ तथ्यों के विश्लेषण हेतु अनुच्छेद लेखन तथा तालिका का उपयोग किया गया है।

इसके अंतर्गत CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों को सम्मिलित किया गया। तथा इनकी CCE के संदर्भ में अभिप्राय, निर्माणात्मक, संकलनात्मक मूल्यमापन से दृष्टिकोण सुधारात्मक, उपचारात्मक, शिक्षण, के प्रति मतावली विचारधारा, नवरचनावाद एवं श्रेणी पद्धती पर समझ एवं पर उनकी विचारशिलता का अध्ययन कर अतः में सभी विषय के संबंध में मतों एवं शोध प्रश्नों की व्याख्या की गई।

मास्टर चार्ट से प्राप्त प्रदत्तों का प्रतिशत विधि माध्यम से विश्लेषण कर व्याख्या की गई जो निम्नलिखित है।

भद्रावती विभाग के सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की सूची

(प्रशिक्षण दिनांक 29-30 अक्टूबर 2010 एवं 8-9 फरवरी 2011)

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित अध्यापकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
1.	सौ. सुकेशा रमेश सराफ	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	0	2	0	1	1	0	6	1	2	1	1	1	1	1	1	40
2.	कु. माधुरी के. बैरम	1	2	0	1	1	1	2	1	1	2	1	0	1	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	1	1	1	0	1	2	36
3.	सौ. मंगला ताराचंद भोयर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	0	2	0	0	1	0	6	1	0	1	1	1	1	1	2	38
4.	सौ. चंद्रकला शंकरराव सौदागर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	1	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	2	2	44
5.	सौ. एम.एस. राऊत	1	0	1	1	1	0	2	1	1	2	0	1	1	1	0	1	2	0	0	1	1	0	1	2	2	1	0	0	1	2	27
6.	सौ. प्रतिभा स. केदारपवार	1	1	1	4	1	1	2	1	2	1	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	2	2	44
7.	सौ. जयश्री दि. दिक्षित	1	1	1	5	1	0	2	1	1	0	1	1	2	1	1	0	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	2	2	43
8.	कु. माया एम. गिरडकर	1	1	0	1	1	1	2	1	1	2	1	0	1	0	0	1	2	1	2	1	0	6	1	2	1	1	1	0	1	2	35
9.	सौ. व्ही.व्ही. पाझारे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	49
10.	सौ. शशिकला आर. काकडे	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	4	1	1	2	1	1	1	2	0	37
11.	सौ. वनकर	1	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	2	1	1	1	1	2	2	44
12.	श्री एम.आय. शेख	1	1	1	4	1	1	2	1	2	1	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	2	2	44
13.	सौ. मंजु पुरूषोत्तम लोणारकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	48
14.	श्री अरविंद मानकर	1	1	0	3	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	2	1	1	2	2	2	42
15.	श्री परमानंद व्ही लभाने	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	1	2	1	1	2	2	2	48
16.	एस.एस. मून	1	1	0	1	1	1	2	0	2	2	0	0	0	0	0	0	2	0	0	0	0	4	0	2	2	1	1	0	0	0	23
17.	राजेश्वर एस. कॉलर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	2	2	1	1	2	1	2	47
18.	श्री प्रशांत एस. मांडवकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	50
19.	श्री बी.सी. चांदेकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	47
20.	श्री कांबले	1	1	0	1	1	1	2	0	0	0	0	1	0	0	1	1	2	1	0	0	0	0	1	2	2	1	0	0	0	0	19
21.	श्री एसबी. गेडाम	1	0	1	4	1	1	2	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	4	1	2	2	1	1	1	2	1	38
22.	श्री एस.आर. ढेगरे	1	0	0	4	1	1	1	1	1	0	0	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	36
23.	सौ. चंदा धरणे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	2	49

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित अध्यापकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
24.	कु. प्रतिभा धकाते	1	1	0	0	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	0	1	0	1	2	1	0	4	1	2	2	1	1	2	2	2	38
25.	कु. प्रिया चाचरकर	1	1	1	5	1	1	2	1	0	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	0	1	2	0	1	1	0	0	0	32
26.	सौ. मनिषा दहिकर	1	1	0	2	1	1	2	1	2	2	1	1	0	0	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	41
27.	श्री टी.डी. पोपळे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	48
28.	श्री व्ही.डी. आवारी	1	1	0	3	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	2	44
29.	श्री पी.के. ढेंगळे	1	1	0	2	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	2	43
30.	श्री संजय आगलावे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	6	1	2	1	1	0	0	1	1	36
31.	कु. आशा मत्ते	1	1	0	3	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	0	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	1	1	41
32.	कु. सुनंदा झाडे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	0	1	2	1	1	0	0	1	1	30
33.	कु. वनिता वैद्य	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	0	1	2	1	1	0	0	1	1	30
34.	सौ. लीला खुजे	1	1	1	5	1	1	1	1	2	2	1	1	2	1	1	0	1	1	2	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	42
35.	कु. प्रा. अ. चिखलीकर	1	1	0	2	1	1	2	0	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	4	1	1	0	1	0	2	1	2	36
36.	सौ. सु.ना. रत्नपारखी	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	1	2	49
37.	कु. च.म. लोहकरे	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	2	1	40
38.	श्री भा.ना. धकाते	1	0	1	4	1	1	2	1	2	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	0	5	1	1	1	1	1	2	2	0	36
39.	श्री राजेश्वर मामीडवार	1	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	42
40.	श्री ज्ञा. महाकुलकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	1	2	49
41.	श्री म. कबासे	1	1	1	4	1	1	0	1	1	2	1	1	1	1	1	1	0	1	2	1	1	4	1	1	2	1	1	2	2	0	38
42.	श्री बी.दरेकर	1	1	1	4	1	1	1	1	2	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	1	1	3	1	1	1	1	1	1	2	2	40
43.	श्री एस. उपलंचीवार	1	1	1	3	1	0	1	1	1	2	1	1	2	0	1	0	1	1	2	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	2	38
44.	श्री डी.डब्ल्यु जांभूळे	1	1	1	4	1	1	1	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	0	1	2	1	0	2	-	2	43
45.	श्री दि. दाते	1	1	1	5	1	0	1	1	1	1	1	1	2	0	1	1	2	1	1	1	1	6	1	1	2	1	1	2	-	-	39
46.	श्री न.कृ. वरभे	1	1	0	2	1	1	2	1	0	2	1	1	1	1	0	0	2	1	2	1	1	4	1	2	1	0	0	2	1	0	33
47.	सौ. के.के.पटले	1	1	1	3	1	1	2	1	0	2	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	6	1	2	1	1	1	1	2	2	42
48.	सौ. यमुना किरने	1	1	1	3	1	1	0	1	2	1	1	1	1	1	1	1	2	1	0	1	1	5	1	1	0	1	1	1	2	2	37
49.	सौ. सी.एस. साहा	1	1	1	3	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	3	1	2	1	1	1	1	2	2	40
50.	सौ. पी.पी. जुमडे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	4	1	2	1	1	1	1	2	2	45
51.	श्री यशवंत महाले	1	0	1	3	1	1	2	1	1	1	1	1	2	-	-	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	43

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित अध्यापकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
52.	श्री रमेश गुडांवार	1	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	-	-	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	0	2	2	40
53.	कु. सुमित्रा सोनेकर	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	-	-	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	0	2	2	41
54.	कु. शालिनी धनधरे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	0	1	1	2	-	-	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	0	1	2	2	39
55.	कु. भावना ऐलावार	1	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	-	-	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	1	2	2	41
56.	कु. विल्लवी लांडे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	-	-	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	43
57.	सौ. वैशाली सातपुते	1	0	1	0	1	1	2	0	1	1	1	1	2	-	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	38
58.	कु. शशीकला कुकुडकर	1	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	1	1	1	2	2	2	44
59.	सौ. बेबीनंदा लांजेवार	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	45
60.	कु. नंदा उरकूडे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	1	1	1	1	1	1	1	40
61.	श्री व्ही.ए. वांढरे	1	1	1	3	1	1	1	0	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	0	2	1	39
62.	श्री एन.एम. बाथाडे	1	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	0	1	1	1	1	1	1	4	1	-	1	1	0	-	-	1	31
63.	श्री जी.बी. बोढाले	1	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	0	1	0	3	0	2	1	1	0	2	2	1	36
64.	श्री डी.डी. दोहतरे	1	1	1	2	1	1	2	1	1	0	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	3	1	-	1	1	1	0	1	2	34
65.	श्री एस.डी. कापसे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	0	1	1	1	-	1	1	1	1	1	1	1	6	1	2	1	1	1	0	2	2	36
66.	श्री एस.एस. धोगडे	1	0	1	2	1	1	0	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	0	1	1	5	1	2	1	1	2	1	0	1	35
67.	श्री ह. डब्लु रोहनकर	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	2	2	2	40
68.	श्री के.एस. मत्ते	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	0	1	0	44
69.	श्री पी.एस. पावडे	0	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	0	1	1	1	2	1	1	6	1	2	1	1	1	0	2	1	41
70.	सौ. अश्विनी अ. पाठक	1	1	1	5	1	1	-	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	40
71.	सौ. शकुंतला ना. कोल्हे	1	1	1	4	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	1	2	2	43
72.	सौ. माया प्रकाश माकोडे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	49
73.	कु. वर्षा पारोद्रे	0	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	47
74.	सौ. पुष्पलता कावरे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	0	0	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	-	-	-	35
75.	श्री आर.पी. दिगदेवतूलवार	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	47
76.	श्री एस.डी. नन्नावरे	1	1	1	0	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	0	2	1	1	5	1	2	2	1	1	0	0	0	35
77.	श्री एस.झेड. झंझाळ	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	1	2	1	1	2	1	1	47
78.	श्री सुरेश निखाडे	1	1	1	4	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	43
79.	श्री मदन गुहाने	1	1	1	3	1	1	1	1	1	2	1	-	2	1	1	1	2	1	1	0	1	4	1	2	2	1	1	2	1	2	40

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित अध्यापकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
80.	श्री विजय तोडसासे	1	1	1	3	1	1	1	1	1	1	-	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	2	1	1	0	1	1	28
81.	श्री सतिश थेरे	1	1	1	2	1	1	1	1	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	2	2	2	42
82.	सौ. संजीविनी चिडे	1	1	1	4	1	0	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	1	2	1	1	1	2	1	42
83.	सौ. माया मोरेश्वर विधे	0	1	1	5	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	1	1	2	1	1	1	2	2	1	40
84.	सौ. ज्योती किशोर चौधरी	0	1	1	5	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	0	1	1	1	5	1	1	2	1	1	1	2	1	41
85.	सौ. जोशी	0	1	1	4	1	0	0	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	20
86.	सौ. शेख	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	48
87.	श्री हाथझाडे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	49
88.	श्री देशमुख	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	49
89.	श्री बर्डे	1	1	1	5	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	45
90.	श्री बनकर	1	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	45
91.	श्री काळबांधे	0	1	1	4	1	1	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	1	42
92.	श्री अशोक नामदेव जवादे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	0	1	2	1	2	1	1	0	1	2	0	1	1	1	2	2	38
93.	श्री नामदेव कवळूजी रामटेके	1	1	1	4	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	0	1	1	1	1	1	1	2	1	36
94.	श्री बनफूलकर	1	1	1	4	0	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	4	1	1	1	2	1	2	2	2	38
95.	सौ. गेटमे	1	1	1	3	1	1	2	1	2	0	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	-	5	1	2	1	1	1	2	1	2	40
96.	सौ. पाटील	0	1	1	5	1	1	2	1	2	1	1	1	2	0	1	1	2	0	1	1	1	5	1	2	1	1	1	2	2	2	43
97.	श्री मसारकर	0	1	1	4	1	1	2	1	2	1	1	1	2	1	1	1	2	0	1	1	0	5	1	0	2	1	1	2	2	-	39
98.	श्री झोडे	0	1	1	3	1	1	2	1	2	1	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	0	0	1	2	2	1	1	1	2	-	35
99.	श्री विलास बोबडे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	0	1	1	1	0	0	0	2	1	2	1	1	0	1	2	1	1	0	0	1	1	27
100.	कु. उर्मिला चिकनकर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	0	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	1	1	1	44
101.	कु. किरण शिंदे	0	1	1	4	1	1	0	1	2	2	1	0	1	1	0	1	2	1	2	1	0	3	1	2	1	1	1	0	2	2	35
102.	कु. रिमता सातपूते	0	1	1	5	1	1	2	1	2	2	0	1	1	1	0	1	1	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	1	43
103.	कु. बेबीनंदा रामटेके	1	1	1	5	1	1	1	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	48
104.	सौ. शालिनी कुरानकर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	0	2	1	1	4	1	1	-	1	1	2	1	-	39
105.	कु. कुंदलता देवगडे	1	0	1	2	1	1	2	1	2	2	1	1	2	0	1	1	2	1	2	0	1	6	1	2	2	1	1	1	2	2	43
106.	कु. सुरेखा कोडापे	0	0	1	0	1	1	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	-	-	1	0	1	0	1	19

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित अध्यापकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
107.	श्री वामन अर्जुन भूसारी	1	1	1	1	1	1	2	1	2	2	1	1	2	0	1	1	2	1	2	1	1	4	1	1	1	1	1	1	1	-	37
108.	श्री हेमराज शामराव झाडे	1	1	1	3	1	1	1	1	-	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	1	2	-	37
109.	श्री शालिक तुकाराम दानव	0	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	3	1	1	1	0	1	1	2	1	38
110.	श्री डी.के. आत्राम	0	1	1	3	1	1	0	0	1	-	1	1	1	-	1	0	1	1	2	1	1	4	1	1	1	1	1	1	2	1	29
111.	कु. पपिया जितेंद्र विश्वास	1	1	1	4	1	1	0	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	0	1	-	1	1	1	1	2	1	33
112.	कु. रंजनी वसंतराव गोंडे	1	1	1	3	1	1	1	0	1	2	1	-	2	1	1	1	1	1	0	1	1	6	1	-	1	1	1	2	2	1	38
113.	कु. संगीता गोकूलराव इंगोले	0	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	-	2	1	1	1	1	1	0	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	36
114.	कु. सिंधु प्रकाश कारमोरे	1	0	1	4	1	0	1	1	1	2	1	-	2	1	1	1	1	1	2	0	1	6	1	1	1	1	1	2	2	2	41
115.	कु. ज्योती बबनराव दाते	1	0	1	5	1	1	1	1	1	1	1	-	2	1	1	1	1	1	1	1	1	4	1	1	1	1	1	1	1	1	36
116.	श्री बोढाले	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	1	1	1	1	2	2	2	45
117.	श्री पी. मेश्राम	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	2	42
118.	श्री हेमेंद्र गजानन बोरकर	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	1	2	1	0	1	1	1	1	1	1	4	1	1	0	1	1	1	1	-	27
119.	कु. किर्ती प्रकाश चाडावार	1	1	1	4	1	1	1	1	2	0	1	1	1	1	0	1	2	1	2	1	1	3	1	1	1	1	1	1	2	2	38
120.	श्री राजू गोपाल चौधरी	0	1	1	0	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	0	1	1	4	1	-	1	1	1	1	-	-	29

तालिका–4.1

CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की CCE के प्रति समझ

क्र.	वर्ग अंतराल	आवृत्ति चिन्ह	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	0-10	o	0	0%
2.	11-20	|||	3	2.5%
3.	21-30	𝍸 ||||	9	7.5%
4.	31-40	𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 |	51	42.5%
5.	41-50	𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 ||	57	47.5%
कुल योग			120	100%

रेखाचित्र–1

CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की CCE के प्रति समझ

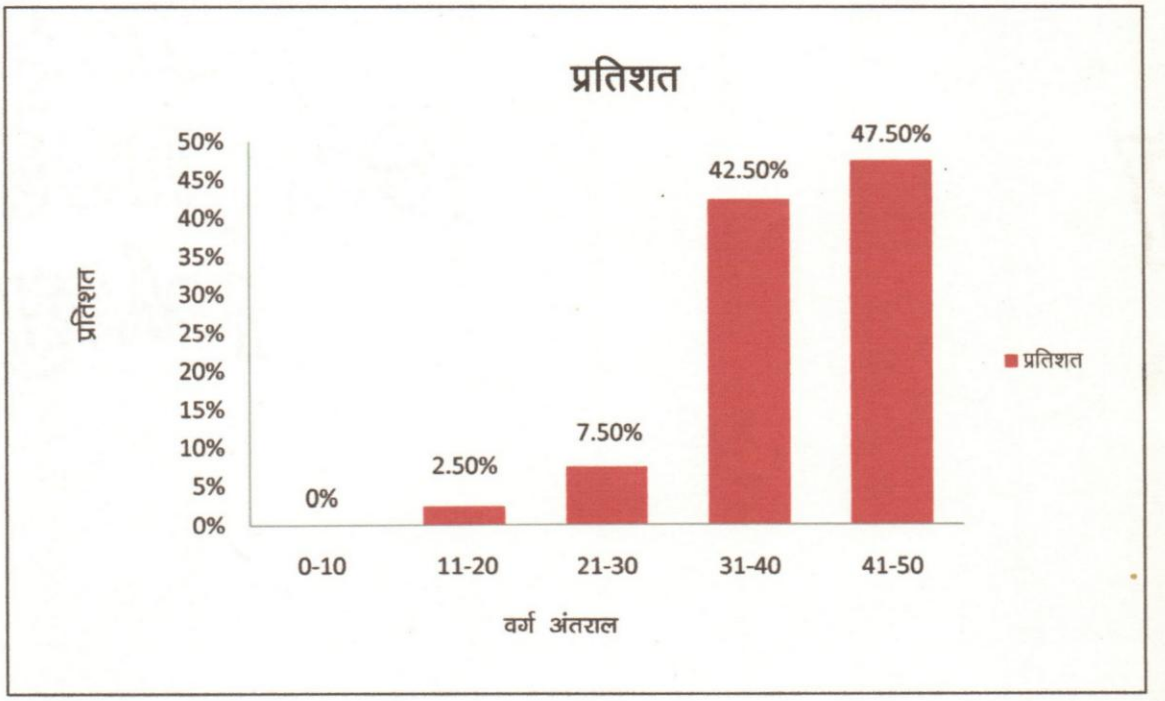

स्पष्टिकरण –

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि, CCE (सतत एवं व्यापक मूल्यमापन) प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के सर्वाधिक कुल योग में से 47.5० प्रतिशत अध्यापक जो 41–50 के वर्ग अंतराल के मध्य आ रहे है। उन्होंने इस

संपूर्ण परीक्षा सुधार के CCE प्रशिक्षण को काफी अच्छी प्रकार से समझ लिया है। जब की कुल योग के 2.5 प्रतिशत अध्यापक जो 11-12 के वर्ग अंतराल के अंतर्गत आ रहे है, उन्हें यह CCE नई परीक्षा प्रणाली अच्छी प्रकार से समझ नहीं आयी है।

निष्कर्ष :- कहा जा सकता है -

"भारत के भाग्य का निर्माण विद्यालय कक्षा में हो रहा है।" तथा आने वाले भविष्य के स्पर्धात्मक विश्व में अपने सर्वांगिन विकास के उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रगति के दौड में जो केन्द्रीय सरकार के अंतर्गत महाराष्ट्र राज्य सरकार जो नये परीक्षा सुधार CCE पद्धति फामुर्ले को कक्षा अध्ययन-प्रक्रिया को जीवन के साथ जोडने हेतु काफी हद तक सफल हो गई है। यह सफलता कक्षा अध्ययन पर अध्यापक द्वारा अध्ययन एवं मूल्यमापन प्रणाली पर प्रभाव डालने में यशस्वी होगी।

अंत में यही निष्कर्ष निकलता है कि 2.5 प्रतिशत अध्यापक, जो 11-20 के वर्ग अंतराल में आ रहे उन्हें प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। ताकि वे अध्यापक भी अपने शिक्षण कौशल्य में पूर्ण निपूर्ण हो सके।

अध्यापक

तालिका 4.2

अध्यापकों की सी.सी.ई. के प्रति समझ का विवरण

क्र.	वर्ग अंतराल	आवृत्ति चिन्ह	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	0-10	o	0	0%
2.	11-20	|	1	1.66%
3.	21-30	𝍸 |	6	10%
4.	31-40	𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 |||	28	46.66%
5.	41-50	𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸	25	41.66%
कुल योग			60	100%

भद्रावती विभाग के सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक की सूची

(प्रशिक्षण दिनांक 29-30 अक्टूबर 2010 एवं 8-9 फरवरी 2011)

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित शिक्षकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
1.	श्री एम.आय. शेख	1	1	1	4	1	1	2	1	2	1	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	2	2	44
2.	श्री अरविंद मानकर	1	1	0	3	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	2	1	1	2	2	2	42
3.	श्री परमानंद व्ही लभाने	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	1	2	1	1	2	2	2	48
4.	श्री एस.एस. मून	1	1	0	1	1	1	2	0	2	2	0	0	0	0	0	0	2	0	0	0	0	4	0	2	2	1	1	0	0	0	23
5.	श्री राजेश्वर एस. कॉलर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	2	2	1	1	2	1	2	47
6.	श्री प्रशांत एस. मांडवकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	50
7.	श्री बी.सी. चांदेकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	47
8.	श्री काबले	1	1	0	1	1	1	2	0	0	0	0	1	0	0	1	1	2	1	0	0	0	0	1	2	2	1	0	0	0	0	19
9.	श्रीएस.बी. गेडाम	1	0	1	4	1	1	2	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	4	1	2	2	1	1	1	2	1	38
10.	श्रीएस. आर. ढेंगरे	1	0	0	4	1	1	1	1	1	0	0	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	36
11.	श्री टी.डी. पोपळे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	48
12.	श्री व्ही.डी. आवारी	1	1	0	3	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	2	44
13.	श्री पी.के. ढेगळे	1	1	0	2	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	2	43
14.	श्री संजय आगलावे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	6	1	2	1	1	0	0	1	1	36
15.	श्री भा.ना. धकाते	1	0	1	4	1	1	2	1	2	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	0	5	1	1	1	1	1	2	2	0	36
16.	श्री राजेश्वर मामीडवार	1	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	42
17.	श्री ज्ञा. महाकूलकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	1	2	49
18.	श्री म. कबासे	1	1	1	4	1	1	0	1	1	2	1	1	1	1	1	1	0	1	2	1	1	4	1	1	2	1	1	2	2	0	38
19.	श्री बी. दरेकर	1	1	1	4	1	1	1	1	2	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	1	1	3	1	1	1	1	1	1	2	2	40
20.	श्री एस. उपलंचीवार	1	1	1	3	1	0	1	1	1	2	1	1	2	0	1	0	1	1	2	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	2	38
21.	श्री डी.डब्लु जांभूळे	1	1	1	4	1	1	1	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	0	1	2	1	0	2	0	2	43

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित शिक्षकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
22.	श्री दि. दाते	1	1	1	5	1	0	1	1	1	1	1	1	2	0	1	1	2	1	1	1	1	6	1	1	2	1	1	2	0	0	39
23.	श्री न.कृ. वरभे	1	1	0	2	1	1	2	1	0	2	1	1	1	1	0	0	2	1	2	1	1	4	1	2	1	0	0	2	1	0	33
24.	श्री यशवंत महाले	1	0	1	3	1	1	2	1	1	1	1	1	2	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	21	1	2	2	2	43
25.	श्री रमेश गुडांवार	1	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	0	2	2	40
26.	श्री व्ही.ए. वांढरे	1	1	1	3	1	1	1	0	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	0	2	1	39
27.	श्री एन.एम. बाथाडे	1	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	0	1	1	1	1	1	1	4	1	0	1	1	0	0	0	1	31
28.	श्री जी.वी. बोढाले	1	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	0	1	0	3	0	2	1	1	0	2	2	1	36
29.	श्री डी.डी. दोहतरे	1	1	1	2	1	1	2	1	1	0	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	3	1	0	1	1	1	0	1	2	34
30.	श्री एस.डी. कापसे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	6	1	2	1	1	1	0	2	2	36
31.	श्री एस.एस. धोगडे	1	0	1	2	1	1	0	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	0	1	1	5	1	2	1	1	1	1	0	1	35
32.	श्री ए. डब्लु. रोहनकर	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	2	2	2	40
33.	श्री के. एस. मत्ते	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	0	1	0	44
34.	श्री पी.एस. पावडे	0	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	0	1	1	1	2	1	1	6	1	2	1	1	1	0	2	1	41
35.	श्री आर.पी. दिगदेवतूलवार	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	47
36.	श्री एस.डी. नन्नावरे	1	1	1	0	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	0	2	1	1	5	1	2	2	1	1	0	0	0	35
37.	श्री एस. झेड झंझाळ	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	1	2	1	1	2	1	1	47
38.	श्री सुरेश निखाडे	1	1	1	4	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	4	1	1	2	1	1	2	2	2	43
39.	श्री मदन गुहाने	1	1	1	3	1	1	1	1	1	2	1	0	2	1	1	1	2	1	1	0	1	4	1	2	2	1	1	2	1	2	40
40.	श्री विजय तोडसे	1	1	1	3	1	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	2	1	1	0	1	1	28
41.	श्री सतिश थेरे	1	1	1	2	1	1	1	1	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	2	2	2	42
42.	श्री हाथझाडे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	49
43.	श्री देशमुख	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	49
44.	श्री बर्डे	1	1	1	5	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	1	1	1	1	2	2	2	49
45.	श्री बनकर	1	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	45

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप → / प्रशिक्षित शिक्षकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
46.	श्री काळबांधे	0	1	1	4	1	1	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	1	42
47.	श्री अशोक नामदेव जवादे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	0	1	2	1	2	1	1	0	1	2	0	1	1	1	2	2	38
48.	श्री नामदेव रामटेके	1	1	1	4	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	0	1	1	1	1	1	1	2	1	36
49.	श्री बनफुलकर	1	1	1	4	0	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	4	1	1	1	1	1	2	2	2	38
50.	श्री भसारकर	0	1	1	4	1	1	2	1	2	1	1	1	2	1	1	1	2	0	1	1	0	5	1	0	2	1	1	2	2	0	39
51.	श्री झोडे	0	1	1	3	1	1	2	1	2	1	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	0	0	1	2	2	1	1	1	2	0	35
52.	श्री विलास बोबडे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	0	1	1	1	0	0	0	2	1	2	1	1	0	1	2	1	1	0	0	1	1	27
53.	श्री वामन अर्जुन भूसारी	1	1	1	1	1	1	2	1	2	2	1	1	2	0	1	1	2	1	2	1	1	4	1	1	1	1	1	1	1	0	37
54.	श्री हेमराज शामराव झाडे	1	1	1	3	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	1	2	0	37
55.	श्री शालीक तुकाराम दानव	0	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	3	1	1	1	0	1	1	2	1	38
56.	श्री डी.के. आत्राम	0	1	1	3	1	1	0	0	1	0	1	1	1	0	1	0	1	1	2	1	1	4	1	1	1	1	1	1	0	1	29
57.	श्री बोढाले	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	1	1	1	1	2	2	2	35
58.	श्री पी. मेश्राम	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	1	1	0	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	2	42
59.	श्री हेमेन्द्र गजानन बोरकर	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	1	2	1	0	1	1	1	1	1	1	4	1	1	0	1	1	1	1	0	27
60.	श्री राजू गोपाल चौधरी	0	1	1	0	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	0	1	1	4	1	0	1	1	1	1	0	0	29
																																2341

रेखा चित्र–2

अध्यापक की सी.सी.ई. के प्रति समझ का विवरण

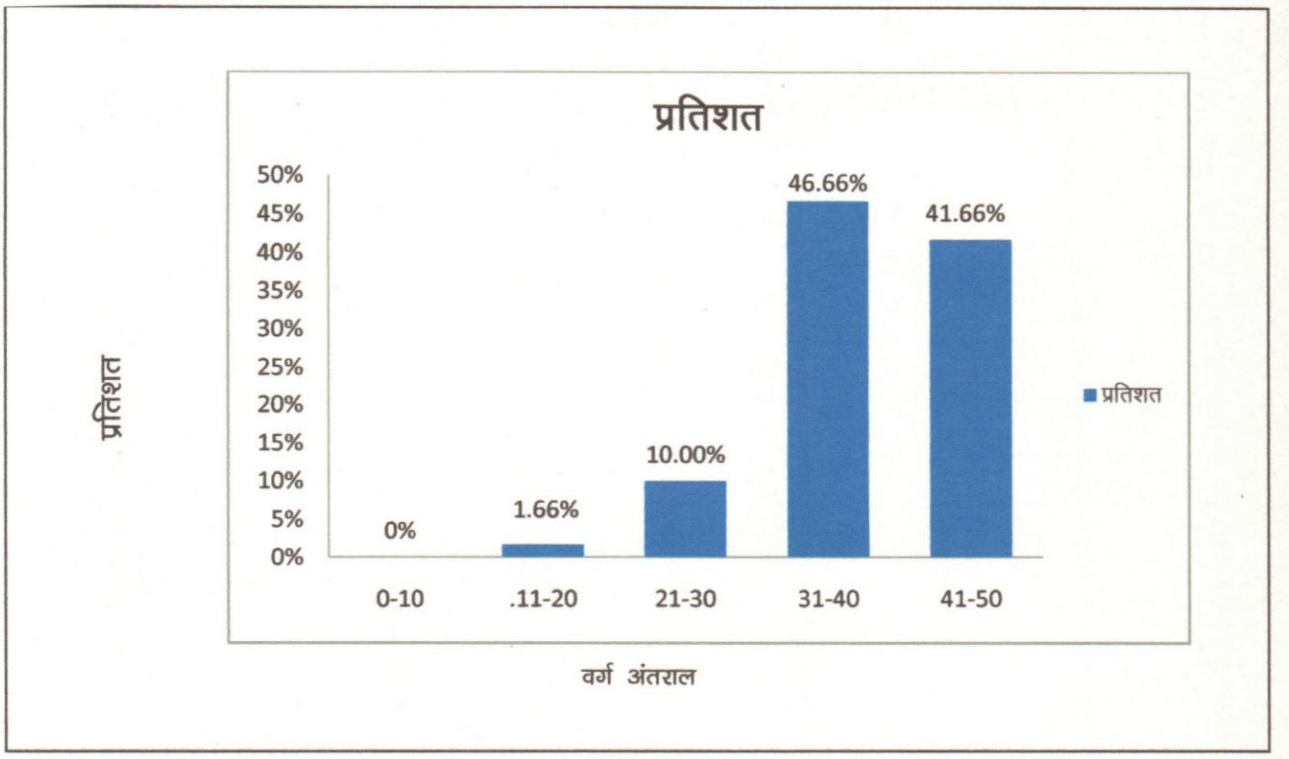

स्पष्टीकरण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि, नई परीक्षा सुधार (CCE) सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक के सर्वाधिक कुल योग में से 46.66 प्रतिशत अध्यापक जो 31 से 40 वर्ग अंतराल के मध्य स्थित है। इन्होंने CCE के नई विद्या को पूर्ण रूप से समझने का प्रयास किया है। हालाकी 41–50 वर्ग अंतराल से 31 से 40 की तुलना में सिर्फ 41.66 प्रतिशत थोडी कम समझ विकसित हुई है। जबकि 21–30 में 10 प्रतिशत और 11 से 20 के मध्य 1.66 प्रतिशत अध्यापक है उन्हें CCE उचित ढंग से नहीं समझ नहीं आई है। इन्हें शिक्षण कौशल्यों के अभ्यास एवं सैद्धातिक व्यवहार के दृष्टिकोण प्रति सकारात्मकता विकसित की आवश्यकता है। साथ ही प्रबल इच्छा शक्ति की कमी को दूर करने अनुक्रिया आधारित प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

निष्कर्षः–

कहा जा सकता है कि, शिक्षा की गुणवत्ता बढाने में अध्यापक का योगदान महत्व पूर्ण होता है। शिक्षा में गुणवत्ता बढाने हेतु अध्यापक को प्रशिक्षण दिया गया। वह काफी अच्छी एवं सकारात्मक दृष्टी से नजर आया। इस प्रशिक्षण को अधिक मात्रा में व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अध्यापक ने समझ लिया। इस समझ का उपयोग भावी पिढ़ी के सर्वांगिन विकास हेतु मार्ग प्रशस्त होगा। लेकिन जिनकी समझ कम विकसित हुई है। उन्हें अधिक प्रशिक्षण देकर उनके समझ को अच्छी प्रकार से विकसित किया जा सकता है।

अध्यापिका

अध्यापिकाओं की CCE के प्रति समझ निम्नलिखित हैः

तालिका 4.3

अध्यापिकाओं की सी.सी.ई. के प्रति समझ का विवरण

क्र.	वर्ग अंतराल	आवृत्ति चिन्ह	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	0-10	o	0	0%
2.	11-20	||	2	3.33%
3.	21-30	|||	3	5%
4.	31-40	𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸	25	41.66%
5.	41-50	𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸 𝍸	30	50%
कुल योग			60	100%

भद्रावती विभाग के सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापिकाओं की सूची

(प्रशिक्षण दिनांक 29-30 अक्टूबर 2010 एवं 8-9 फरवरी 2011)

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप ⟶ / प्रशिक्षित शिक्षकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
1.	सौ. सुकेशा रमेश सराफ	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	0	2	0	1	1	0	6	1	2	1	1	1	1	1	1	40
2.	कु. माधुरी के बैरम	1	1	0	1	1	1	2	1	1	2	1	0	1	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	1	1	1	0	1	2	36
3.	सौ. मंगला ताराचंद भोयर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	0	2	0	0	1	0	6	1	0	1	1	1	1	1	2	38
4.	सौ. चंद्रकला शंकरराव सौदागर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	1	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	2	2	44
5.	सौ. एम.एस. राऊत	1	0	1	1	1	0	2	1	1	2	0	1	1	1	0	1	2	0	0	1	1	0	1	2	2	1	0	0	1	2	27
6.	सौ. प्रतिभा स. केदारपवार	1	1	1	4	1	1	2	1	2	1	0	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	2	2	44
7.	सौ. जयश्री दि. दिक्षित	1	1	1	5	1	0	2	1	1	0	1	1	2	1	1	0	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1.	1	2	2	43
8.	कु. माया एम. गिरडकर	1	1	0	1	1	1	2	1	1	2	1	0	1	0	0	1	2	1	2	1	0	6	1	2	1	1	1	0	1	2	35
9.	सौ. व्ही.व्ही. पाझारे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	49
10.	सौ. शशिकला आर. काकडे	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	4	1	1	2	1	1	1	2	0	37
11.	सौ. छाया वनकर	1	1	1	4	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	2	1	1	1	1	2	2	44
12.	सौ. मंजु लोणारकर	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	48
13.	सौ. चंदा धरणे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	2	49
14.	कु. प्रतिभा धकाते	1	1	0	0	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	0	1	0	1	2	1	0	4	1	2	2	1	1	2	2	2	38
15.	कु. प्रिया चाचरकर	1	1	1	5	1	1	2	1	0	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	0	0	1	2	0	1	1	0	0	0	32
16.	सौ. मनिषा दहिकर	1	1	0	2	1	1	2	1	2	2	1	1	0	0	1	1	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	2	2	2	41
17.	कु. आशा मत्ते	1	1	0	3	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	0	1	2	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	1	1	1	41
18.	कु. सुनंदा झाडे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	0	1	2	1	1	0	0	1	1	30
19.	कु. वनिता वैद्य	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	0	1	0	2	1	2	1	1	0	1	2	1	1	0	0	1	1	30
20.	सौ. लीला खुजे	1	1	1	5	1	1	1	1	2	2	1	1	2	1	1	0	1	1	2	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	42
21.	कु. प्रा.अ. चिखलीकर	1	1	0	2	1	1	2	3\0	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	4	1	1	0	1	0	2	1	2	36

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप ⟶ / प्रशिक्षित शिक्षकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
22.	सौ. सु.ना. रत्नपारखी	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	1	2	49
23.	कु. च.म.लोहकरे	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	2	2	1	40
24.	सौ.के.के. पटले	1	1	1	3	1	1	2	1	0	2	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	6	1	2	1	1	1	1	2	2	42
25.	सौ. यमुना किरने	1	1	1	3	1	1	0	1	2	1	1	1	1	1	1	1	2	1	0	1	1	5	1	1	0	1	1	1	2	2	37
26.	सौ. सी.एस. साहा	1	1	1	3	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	3	1	2	1	1	1	1	2	2	40
27.	सौ. पी.पी. जुमडे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	1	1	1	4	1	2	1	1	1	1	2	2	45
28.	कु. सुमित्रा सोनेकर	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	0	2	2	41
29.	कु. शालिनी धनधरे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	0	1	1	2	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	0	1	2	2	39
30.	कु. भावना ऐलावार	1	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	1	2	2	41
31.	कु. बिल्लवी लांडे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	0	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	43
32.	सौ. वैशाली सातपुते	1	0	1	0	1	1	2	0	1	1	1	1	2	0	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	38
33.	कु. शशीकला कुकुडकर	1	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	0	1	2	1	2	1	1	6	1	2	1	1	1	2	2	2	44
34.	सौ. बेवीनंदा लांजेवार	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	45
35.	कु. नंदा उरकुडे	1	0	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	1	1	1	1	1	1	1	40
36.	सौ. अश्विनी अ. पाठक	1	1	1	5	1	1	0	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	40
37.	सौ. शकुंतला ना. कोल्हे	1	1	1	4	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	2	1	1	1	1	2	2	43
38.	सौ. माया प्र. माकोडे	1	1	1	5	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	49
39.	कु. वर्षा पारोद्रे	0	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	47
40.	सौ. पुष्पलता कावरे	1	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	2	1	0	0	2	1	2	1	1	4	1	2	2	1	1	0	0	0	35
41.	सौ. संजीविनी चिडे	1	1	1	4	1	0	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	5	1	1	2	1	1	1	2	1	42
42.	सौ. माया मोरेश्वर विधे	0	1	1	5	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	1	1	2	1	1	1	2	2	1	40
43.	सौ. ज्योती किशोर चौधरी	0	1	1	5	1	0	2	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	0	1	1	1	5	1	1	2	1	1	1	2	1	41
44.	सौ. जोशी	0	1	1	4	1	0	0	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	20
45.	सौ. शेख	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	1	2	1	2	1	1	5	1	2	2	1	1	2	2	2	48

क्र.	प्रश्न संख्या प्रारूप ⟶ / प्रशिक्षित शिक्षकों के नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	योग
46.	सौ. गेटमे	1	1	1	3	1	1	2	1	2	0	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	0	5	1	2	1	1	1	2	1	2	40
47.	सौ. पाटील	0	1	1	5	1	1	2	1	2	1	1	1	2	0	1	1	2	0	1	1	1	5	1	2	1	1	1	2	2	2	43
48.	कु. उर्मिला चिकनकर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	0	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	1	1	1	44
49.	कु. किरन शिंदे	0	1	1	4	1	1	0	1	1	2	1	0	1	1	0	1	2	1	2	1	0	3	1	2	1	1	1	0	2	2	35
50.	कु. स्मिता सातपुते	0	1	1	5	1	1	2	1	2	2	0	1	1	1	0	1	1	1	2	1	0	6	1	2	2	1	1	2	2	1	43
51.	कु. बेबीनंदा रामटेके	1	1	1	5	1	1	1	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	1	2	1	1	6	1	2	2	1	1	2	2	2	48
52.	सौ. शालिनी कुरानकर	1	1	1	4	1	1	2	1	2	2	1	1	1	1	1	1	2	0	2	1	1	4	1	1	0	1	1	2	1	0	39
53.	कु. कुंदलता देवगडे	1	0	1	2	1	1	2	1	2	2	1	1	2	0	1	1	2	1	2	0	1	6	1	2	2	1	1	1	2	2	43
54.	कु. सुरेखा कोडापे	0	0	1	0	1	1	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	1	0	1	19
55.	कु. पपिया जितेंद्र विश्वास	1	1	1	4	1	1	0	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	0	1	0	1	1	1	1	2	1	33
56.	कु. रजनी वसंतराव गोंडे	1	1	1	3	1	1	1	0	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	0	1	1	6	1	0	1	1	1	2	2	1	38
57.	कु. संगिता गोकुलराव इंगोले	0	1	1	2	1	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	0	1	1	5	1	1	1	1	1	1	2	1	36
58.	कु. सिंधु प्रकाश कारमोरे	1	0	1	4	1	0	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	1	1	2	0	1	6	1	1	1	1	1	2	2	2	41
59.	कु. ज्योती बबनराव दाते	1	0	1	5	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	1	1	1	4	1	1	1	1	1	1	1	1	36
60.	कु. किर्ती प्रकाश चाडावार	1	1	1	4	1	1	1	1	2	0	1	1	1	1	0	1	2	1	2	1	1	3	1	1	1	1	1	1	2	2	38

रेखाचित्र –3

अध्यापिकाओं की सी.सी.ई. के प्रति समझ का विवरण

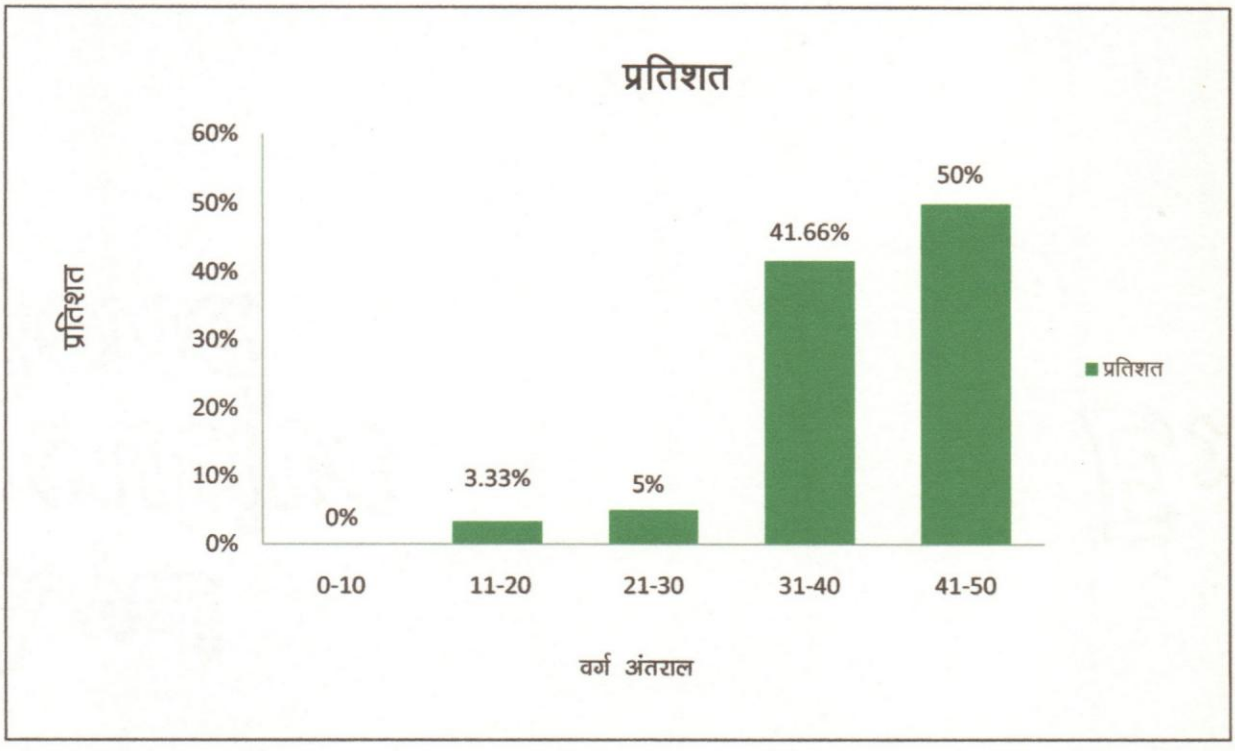

स्पष्टीकरणः–

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक अध्यापिकाओं के कुल योग का 50 प्रतिशत CCE को प्रशिक्षण में अध्यापिकाओं ने (परीक्षा सुधार की गतिविधियाँ एवं प्रविधियाँ) योग्य प्रकार से समझी है। जो कि 41 से 50 के वर्ग अंतराल के अंदर है। और सर्वाधिक कम समझ 11 से 20 के वर्ग अंतराल के अध्यापिकाओं की 3.33 प्रतिशत की समझ है। इन कम समझ की अध्यापिकाओं को अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

निष्कर्षः–

कहा जा सकता है कि प्रशिक्षित अध्यापिका शिक्षा के प्रति जागरूक है। परीक्षा सुधार प्रणाली को उन्होंने अच्छे प्रकार से समझ लिया है। अध्यापिका अपने व्यवसाय के प्रति एवं व्यपसायिक कौशल्य के साथ नए ज्ञान प्राप्त करने, नए ज्ञान को सिखने, में काफी उत्साही है। अतः इनके समझ को देखते हुये यह भी कहा जा सकता है कि यह अध्यापिका अपने

सामान्य और विशिष्ट ज्ञान को अच्छी प्रकार से प्रयुक्त कर लोकसेवा में उसका सफलता पूर्वक उपयोग कर बौद्धिकता का सामान्य शिक्षा में विशिष्टता विशेष शिक्षा में उपयोग कर शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति करने में अपना योगदान दे सकती है। मूल्यमापन के नये विद्या का सहर्ष से स्वागत कर शिक्षण के उद्देश्य की पूर्ती कर सकती है एवं विद्यार्थियों को भविष्य में योग्य मार्गदर्शन करने में मदद कर सकती है।

❖ शोध उद्देश्य की व्याख्या एवं विश्लेषण

शोध अध्ययन के उद्देश्य की प्राप्ति करने हेतु भद्रावती विभाग के 120 CCE सत्य पूर्ण सर्वेकष मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों को यह प्रश्नावली दी गई उनमें 60 अध्यापक एवं 60 अध्यापिका थी।

सतत एवं व्यापक मूल्यमापन

इस संकल्पना की समझ जानने के लिए प्रश्नावली में प्रश्न क्रमांक 1, 2, 3, 4, 5 तथा 15 रखे गये। इनके प्राप्तांक क्रमशः 1, 1, 1, 5, 1 तथा 1 थे। यह प्रश्नावली सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त 120 अध्यापकों को दी गयी, जिसमें 60 अध्यापक थे तथा 60 अध्यापिका थी। उपरोक्त प्रश्नों में अध्यापक तथा अध्यापिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दिये गये है।

तालिका 4.4

सी.सी.ई. प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की सी.सी.ई संकल्पना के प्रति समझ

प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक	प्रश्न.संख्या / प्राप्तांक वर्गीकरण	क्र.1 (1)	क्र.2 (1)	क्र.3 (1)	क्र.4 (5)	क्र.5 (1)	क्र.15 (1)	योग (10)	प्रतिशत
अध्यापक	60	52	53	50	201	59	51	466	77.66%
अध्यापिका	60	51	48	51	202	60	45	457	76.16%
कुल अध्यापक	120	103	111	101	403	119	96	923	76.91%

स्पष्टीकरणः–

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि, शोध अध्ययन क्षेत्र में CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के 1200 प्राप्तांक से 923 प्राप्तांक प्राप्त हुये है। जिनका कुल योग 76.91 प्रतिशत है। उनमें अध्यापक का 600 प्राप्तांक में से 466 योग है। इससे इनकी CCE के प्रति 77.66 प्रतिशत की समझ का पता लगता है। अध्यापिकाओं के 600 प्राप्तांक में 457 योग है। इनकी 76.16 प्रतिशत की समझ ज्ञात हो रही है।

निष्कर्षः–

उपरोक्त स्पष्टीकरण से यह ज्ञात होता है कि 77.66 प्रतिशत अध्यापकों की एवं 76.16 प्रतिशत अध्यापिकाओं को CCE की समझ है।

निर्माणात्मक मूल्यमापन

इस संकल्पना की समझ जानने के लिए प्रश्नावली में प्रश्न क्रमांक 6, 7, 9, 11, 16, 17 तथा 18 रखे गये। इनके प्राप्तांक क्रमशः 1, 2, 2, 1, 1, 2 तथा 1 थे। उपरोक्त प्रश्नों में अध्यापक तथा अध्यापिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दिये गये है।

तालिका 4.5

निर्माणात्मक मूल्यमापन स्वरूप के संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों के समझ

प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक	प्रश्न.संख्या / प्राप्तांक वर्गीकरण	क्र.6 (1)	क्र.7 (2)	क्र.9 (1)	क्र.11 (1)	क्र.16 (1)	क्र.17 (2)	क्र.18 (1)	योग	प्रतिशत
अध्यापक	60	58	94	80	54	53	100	56	495	82.5%
अध्यापिका	60	54	100	85	56	51	102	54	502	83.66%
कुल अध्यापक	120	112	194	165	110	104	202	110	997	83.8%

स्पष्टीकरणः–

निम्नलिखित तालिका से यह ज्ञात होता है कि निर्माणात्मक मूल्यमापन संदर्भ में कुल 1200 में से 997 प्राप्तांक प्राप्त हुये है। जिनसे 83.08

प्रतिशत समझ ज्ञात हुई है। इनमें अध्यापक के 600 प्राप्तांक में 495 योग है। उनमें 82.5 प्रतिशत की समझ पता चलती है। अध्यापिकाओं का कुल 600 प्राप्तांक में 502 योग है। इनमें 83.66 प्रतिशत निर्माणात्मक मूल्यमापन की समझ ज्ञात हो रही है।

निष्कर्षः– कहा जा सकता है कि, निर्माणात्मक मूल्यमापन कुल योग में 83.08 प्रतिशत अध्यापकों को समझ में आया है। जिनमें 82.5 प्रतिशत अध्यापक एवं 83.66 अध्यापिका है। निर्माणात्मक मूल्यमापन में यहां अध्यापकों से अध्यापिका की समझ निर्माणात्मक मूल्यमापन में अधिक है।

संकलनात्मक मूल्यमापन

इस संकल्पना की समझ जानने हेतु प्रश्नावली में प्रश्न क्रमांक 8, 10, 14, 19, 20, 21, तथा 22 रखे गये। इनके प्राप्तांक क्रमशः 1, 2, 1, 2, 1, 1 तथा 1 थे। उपरोक्त प्रश्नों में अध्यापक तथा अध्यापिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दर्शाये गये है।

तालिका 4.6

संकलनात्मक मूल्यमापन संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों के समझ

प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक	प्रश्न.संख्या / प्राप्तांक वर्गीकरण	क्र.8 (1)	क्र.10 (2)	क्र.14 (1)	क्र.19 (2)	क्र.20 (1)	क्र.21 (1)	क्र.22 (6)	योग	प्रतिशत
अध्यापक	60	55	94	47	93	57	51	261	659	84.48%
अध्यापिका	60	55	111	47	93	58	47	271	682	87.43%
कुल अध्यापक	120	110	205	94	186	115	98	532	1340	55.83%

स्पष्टीकरण :–

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि, संकलनात्मक मूल्यमापन संबंधी कुल 2400 में से 1340 प्राप्तांक अध्यापकों को प्राप्त हुये जिनसे 55.83 प्रतिशत अध्यापकों की समझ ज्ञात हुई। उसमें अध्यापक को 780 में 659 प्राप्तांक प्राप्त हुये इनसे 84.48 प्रतिशत समझ ज्ञात होती है।

अध्यापिकाओं को 780 में 682 प्राप्तांक प्राप्त हुये उसमें 87.43 प्रतिशत समझ की प्राप्ती हुई है।

निष्कर्षः-

कहा जा सकता है की, संकलनात्मक मूल्यमापन कुल योग में 55.83 प्रतिशत अध्यापकों को समझ में आया है। जिनमें 84.48 प्रतिशत अध्यापक तथा 87.43 अध्यापिका की समझ ज्ञात हो गयी है।

सुधारात्मक शिक्षणः- इस संकल्पना की समझ जानने के लिए प्रश्नावली में प्रश्न क्रमांक 12, 25 तथा 26 रखे गये। इनके प्राप्तांक 1, 2, 1 थे। निम्नलिखित प्रश्नों में अध्यापक तथा अध्यापिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दिये गये है।

तालिका 4.7

सुधारात्मक शिक्षण संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों के समझ

प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक	प्रश्न संख्या / प्राप्तांक वर्गीकरण	प्र.क्र.12 (1)	प्र.क्र.25 (2)	प्र.क्र.26 (1)	योग	प्रतिशत
अध्यापक	60	58	90	58	206	85.83%
अध्यापिका	60	57	82	60	199	82.91%
	120	115	172	118	405	84.37%

स्पष्टीकरणः- उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि, शोध अध्ययन क्षेत्र में सुधारात्मक शिक्षण पर 480 प्राप्तांक में 405 प्राप्तांक प्राप्त हुये है। इनसे 84.37 प्रतिशत अध्यापकों की समझ का आकलन होता है। इसके अन्तर्गत कुल प्राप्तांक के 240 में 206 प्राप्तांक अध्यापक को प्राप्त हुये। जिनसे 85.83 प्रतिशत अध्यापक की एवं कुल प्राप्तांक के 240 में 199 अध्यापिकाओं में 82.91 प्रतिशत समझ ज्ञात हो रही है।

निष्कर्षः- निम्न स्पष्टीकरण से कहा जा सकता है कि सुधारात्मक शिक्षण कुल योग में 84.37 प्रतिशत अध्यापकों को समझ में आया जिसमें 85.83 प्रतिशत अध्यापक तथा 82.91 प्रतिशत अध्यापिकाओं की समझ ज्ञात होती है।

उपचारात्मक (निदानात्मक) शिक्षण–

इस संकल्पना की समझ जानने हेतु प्रश्नावली में प्रश्न क्र.22, 24, 27 रखे गये। इनके प्राप्तांक क्रमशः 1, 2, 1 थे। इस प्रश्नावली में अध्यापक तथा अध्यापिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दर्शाये गये है।

तालिका 4.8

उपचारात्मक शिक्षण संबंधी प्रशिक्षित अध्यापकों के समझ

प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक	प्रश्न संख्या / प्राप्तांक वर्गीकरण	प्र.क्र.22 (1)	प्र.क्र.24 (2)	प्र.क्र.27 (1)	योग	प्रतिशत
अध्यापक	60	57	90	53	200	90.90%
अध्यापिका	60	60	96	54	210	95.45%
	120	117	186	107	410	85.40%

स्पष्टीकरणः– उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि उपचारात्मक शिक्षण संदर्भ में कुल 480 में से 410 प्राप्तांक अध्यापकों को प्राप्त हुये है। जिनसे 85.40 प्रतिशत अध्यापकों की उपचारात्मक शिक्षण में समझ ज्ञात हुई है। इसमें अध्यापक का 220 प्राप्तांक में 200 योग प्राप्त हुआ जिससे 90. 90 प्रतिशत इनकी समझ है तथा अध्यापिका का कुल 220 प्राप्तांक का 210 योग है। इनमें 95.45 प्रतिशत की समझ ज्ञात हो रही है।

निष्कर्ष– कहा जा सकता है कि, उपचारात्मक शिक्षण कुल योग में 85.40 प्रतिशत अध्यापकों को समझ में आया है जिनमें 90.90प्रतिशत अध्यापक एवं 95.45 प्रतिशत अध्यापिका को यह समझ में आया है।

नवरचनावादी दृष्टिकोण

इस संकल्पना की समझ जानने हेतु प्रश्नावली में प्रश्न क्र.28, 29 तथा 30 रखे गये। इनके प्राप्तांक क्रमशः 2, 2 तथा 2 थे। उपरोक्त प्रश्नों में अध्यापक तथा अध्यापिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दर्शाये गये है।

तालिका 4.9

नवरचनावादी दृष्टिकोण संबंधी प्रशिक्षित अध्यापकों के समझ

प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक	प्रश्न संख्या / प्राप्तांक वर्गीकरण	प्र.क्र.28 (2)	प्र.क्र.29 (2)	प्र.क्र.30 (2)	योग	प्रतिशत
अध्यापक	60	77	90	76	243	67.5%
अध्यापिका	60	73	97	93	263	73.05%
	120	105	187	169	506	70.27%

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि नव रचनावाद संदर्भ में कुल 720 प्राप्तांक में 506 प्राप्तांक अध्यापकों को प्राप्त हुये है। जिनसे 70.27 प्रतिशत समझ ज्ञात हो रही है। इनमें अध्यापक का 243 प्राप्त योग है निसे 67.5 प्रतिशत समझ प्राप्त हुई है। तथा अध्यापिकाओं का कुल प्राप्तांक में 360 में 263 योग है। अर्थात् 73.05 प्रतिशत समझ ज्ञात हुई है।

निष्कर्ष :–कहा जा सकता है कि, नव रचनावादी संकल्पना के कुल योग में 70.27 प्रतिशत अध्यापकों की समझ है जिनमें 67.5 प्रतिशत अध्यापक एवं 73.05 अध्यापिकाओं को यह नव रचनावाद की संकल्पना समझ में आयी है।

श्रेणी:–

इस संकल्पना की समझ जानने के लिए प्रश्नावली में प्रश्न क्रमांक 13 रखा गया है। इसका प्राप्तांक 2 है। उपरोक्त प्रश्नावली से अध्यापक तथा अध्यापिका द्वारा प्राप्त प्राप्तांक निम्नलिखित तालिका में दिये गये है।

तालिका 4.10

श्रेणी पद्धति संबंधी प्रशिक्षित अध्यापकों की समझ

प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक	प्रश्न संख्या / प्राप्तांक वर्गीकरण	प्र.क्र.13 (2)	योग	प्रतिशत
अध्यापक	60	86	86	71.66%
अध्यापिका	60	87	87	72.5%
	120	173	173	72.08%

स्पष्टीकरणः– उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि, श्रेणी पद्धति संबंधी कुल योग के 240 में 173 प्राप्तांक अध्यापकों को प्राप्त हुये है। जिनसे 72.08 प्रतिशत प्रशिक्षित अध्यापकों के समझ का आकलन होता है। उसमें अध्यापक के 120 में 86 प्राप्तांक प्राप्त हुये है। इसमें इनकी 71.66 प्रतिशत समझ ज्ञात होती है। अध्यापिका के 120 में 87 प्राप्तांक प्राप्त हुये इनमें 72.5 प्रतिशत की समझ ज्ञात हुई है।

निष्कर्षः– यह कहा जा सकता है कि, श्रेणी प्रणाली कुल योग में 72.08 प्रतिशत अध्यापकों को समझ में आयी है। जिनमें 71.66 प्रतिशत अध्यापक एवं 72.5 प्रतिशत अध्यापिकाओं की समझ ज्ञात हुई है।

❖ **शोध प्रश्नों की व्याख्या एवं विश्लेषण :–**

❖ सतत एवं व्यापक मूल्यमापन संकल्पना के सतत एवं व्यापक मूल्यमापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की समझ :

CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की CCE के प्रति समझ उपरोक्त है :–

- जब मूल्यमापन को शैक्षणिक क्रियाकलापों से निरन्तरता के आधार पर जोड़ते है इसे सतत मूल्यमापन कहा जाता है।
- यह प्रणाली शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति एवं विद्यार्थी का सर्वांगिन विकास करने के साथ ही विद्यार्थी के अंदर छिपे प्रतिभा को उन्नत करने में सहायक हो सकती है।
- यह अध्यापक, विद्यार्थी एवं अभिभावक में शिक्षण–अधिगम की व्यवस्था से संबंधित कमी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक है। इससे विद्यार्थी की सिखने संबंधी कमी को सुधारने में अवसर प्राप्त होता है।
- यह मूल्यमापन की एक ऐसी व्यवस्था है जो सिखने सिखाने के प्रक्रिया के साथ चलती रहती है, जिसमें विद्यार्थी के अनुभव व्यवहार पर होने वाले परिवर्तन पर लगातार वृद्धि होती रहती है।

- CCE शिक्षण में विद्यार्थी के ज्ञानात्मक पक्ष के साथ कौशल, रूचि, मूल्य, अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व विकास का आंकलन किया जाता है।
- CCE शिक्षण उपयोगिता के आधार में विभिन्न प्रकार की परीक्षा अधिक परीक्षण मासिक परीक्षण निष्पादन परीक्षण, एकल परीक्षण तथा सत्रान्त परीक्षणों में व्यापकता को देखा जाता है।
- CCE से बच्चों के रटन ज्ञान में कमी आती है तथा उनका सामान्य और रचनात्मक ज्ञान सामने आने में मदद मिलती है।
- CCE में रचनात्मक ज्ञान में निर्माणात्मक मूल्यमापन होगा तथा व्यवहारिक ज्ञान संकलनात्मक मूल्यमापन से जांचने में मदद मिलेगी।

❖ निर्माणात्मक मूल्यमापन एवं संकलनात्मक मूल्य मापन संबंध में CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों का दृष्टिकोण :

निर्माणात्मक मूल्यमापन संबंध में CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों का निम्न दृष्टिकोण है:

- इस शिक्षा से विद्यार्थियों के व्यवहारिक ज्ञान का निर्धारण होगा।
- यहां प्रभावी पठन–पाठन प्रभावी मूल्यमापन एक ही सिक्के के दो पहलू है।
- पढ़ाने व सीखने की सतत प्रक्रिया में ही मूल्यमापन को जोडने से बच्चे के मन से किसी भी प्रकार के परीक्षा का भय व तानव दूर होगा। साथ ही बस्ते का बोझ कम होने से छात्र शिक्षण प्रक्रिया में उत्साह रहेगा तथा कक्षा की उपस्थिति बढने में मदद मिल सकेगी।
- अभिभावक अपने बच्चों की प्रगति का समय–समय पर जायजा ले सकेंगे।
- इस मूल्यमापन से विद्यार्थी एवं अध्यापक दोनों के अधिगम की सफलता तथा असफलता के बारे में पता चलने से अधिगम के

महत्व को अध्यापक विद्यार्थी एवं अभिभावक सुरक्षित भविष्य के लिए सतर्क हो गये है। वे अब परीक्षाओं के महत्व को समझने लगे है।

- निर्माणात्मक मूल्यंमापन शिक्षण की अवधि में प्रयुक्त युक्तविधि, प्रविधि की प्रभाविता पर बल देता है। जिससे इनमें अपेक्षित सुधार में मदद मिलती है तथा संकलनात्मक मूल्यमापन शैक्षिक उद्देश्यों अधिगम परिणाम पर आधारित होने से पाठ्यक्रम की सफलता एवं गुणवत्ता का पत्ता इससे लगाया जा सकता है।
- निर्माणात्मक मूल्यमापन में दैनिक निरीक्षण, मौखिक कार्य, मौखिक परीक्षा, लिखित परीक्षा, प्रयोग, प्रत्याक्षिक, उपक्रम, कृती, प्रकल्प, स्वाध्याय–गृहकार्य इन साधन एवं तंत्रों के उपयोग से छात्रों का मूल्यमापन उचित दिशा में होकर उन्हें भविष्य की और दिशा की गती दर्शाने में उपयोगी होता है।
- निर्माणात्मक एवं संकलनात्मक मूल्यमापन में विद्यार्थियों के स्मरण के साथ आकलन उपयोजन, विचारशिलता, कल्पना, शारीरिक, बौद्धिक, भावनिक कौशल्य का सर्वांगिन विकास करने में इसकी आवश्यकता होगी।
- निर्माणात्मक मूल्यमापन से विद्यार्थियों की प्रगती एवं कठिनाई का पता लगाया जा सकता है। साथ ही प्रकल्प देने से कक्षा ज्ञान को विश्व के ज्ञान से जोडने एवं विद्यार्थियों को निरीक्षण के साथ पाठयपुस्तक के बाहर जाकर स्व अध्ययन करने स्वयं के प्रश्नों के स्वयं उत्तर ढूढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसमें बौद्धिक विकास पर मुक्तातरी प्रश्न भावनिक विकास में गाभा घटक मूल्यें, जीवन कौशल्य आदी का समावेश करने से छात्रों के सर्जनशीलता का पत्ता ल गत सकता है।
- संकलित मूल्यमापन में सालभर के विभिन्न स्तरों में विभाजित व्यक्ति विकास का संकलित चित्र इकट्टा कर अध्ययन–अध्यापन की दिशा ज्ञात करने में इसकी मदद मिल सकती है तथा इसका आयोजन प्रथम

सत्र, द्वितीय सत्र के आखिरी में तथा विद्यार्थियों में उत्तर पत्र में अधिक समय देने से विद्यार्थियों का सही आकलन हो सकेगा।

- संकलित मूल्यमापन में ज्ञान आकलन, आयोजन विश्लेषण संश्लेषण एवं मूल्यमापन करने से शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ती करने में इसकी मदद मिल सकती है।

❖ सुधारात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण के संबंध में प्रशिक्षित अध्यापकों की विचारधारा

सुधारात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण संबंध में प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की विचारधारा निम्नलिखित है।

बालक के निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षण अधिकार अधिनियम 2009 में कलम 24 (1) में अध्यापकों के कर्तव्य स्पष्ट करते समय अध्यापकों ने विद्यार्थियों को अतिरिक्त पुरक मार्गदर्शन करने की सिफारिश की गई है। इसके अंतर्गत उपायों में अध्यापक मार्गदर्शन करते समय तथा विद्यार्थी कार्य करते समय समूह कार्य से सीखते या सिखाते समय अध्यापकों ने विद्यार्थियों के तरफ ध्यान देना जरूरी होता है। किसको समझ में आता है। सिको नहीं आता यह निरीक्षण से ज्ञात होने में मदद मिलती है। निर्माणात्मक मूल्यमापन समय तथा संकलनात्मक मूल्यमापन के बाद अतिरिक्त मार्गदर्शन करना चाहिये। इससे छात्रों के कठिनाई पर अकुंश लग सकता है। छात्र अधिक से अधिक गलतियाँ करता है तो उसे उस संदर्भ में सतत मार्गदर्शन करना जरूरी है। निर्माणात्मक मूल्यमापन में दैनिक निरीक्षण एवं अन्य साधना तंत्रों द्वारा मूल्यमापन में मिलने वाले प्रतिसाद को विचार में लेते हुये अध्ययन की त्रुटी एवं कठिनाई निश्चित कर यह त्रुटी मूल्यमापन के बाद समय पर दूर करने में यह शिक्षण विधि में मददगार साबित हो सकती है।

- विद्यार्थियों के अध्ययन में होने वाले तथा आने वाले कमियों, त्रुटियों को दूर करने हेतु इसका उपयोग किया जाता है।

- कक्षा अध्ययन में विद्यार्थियों का ध्यान न होना, एकाग्रता की कमी कक्षा में अध्यापकों से तथा कठिन विषयों का डर लगना, पढ़ने लिखने में कठिनाई आना पाठ्य पुस्तक और अध्यापकों की भाषा न समझना, कक्षा में अनुपास्थिति संख्याज्ञान की कमी, प्रश्न न समझना विषयों में रूचि न लगना, आदि आदि को निरीक्षण, स्वाध्याय कक्षा पाठ, मूल्यमापन से पता लगाकर विद्यार्थियों को शिक्षण में कहाँ कठिनाई आ रही है उस पर विद्यार्थियों को भाषा सरल करके बताना, आशय को स्तरों के अनुसार पूर्ण करना, सराव लेना आदि की जानकारी इस शिक्षण से प्राप्त हो सकती है।

मूल्यमापन के आधार पर बच्चों की विषयवार समस्याओं को पहचानना तथा उनका उपचार करना क्रियात्मक शोध को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अंग के रूप में अपनाने हेतु इसकी सुविधा हो सकती है।

❖ **ज्ञान रचनावाद के संदर्भ में प्रशिक्षित अध्यापकों की विचारधारा –**

- सीखने वाला अपने वातावरण से अतः क्रिया कर स्वयं अपने ज्ञान का निर्माण कर सकता है।
- ज्ञान बाहर से दिया जाता है तथा इसका केन्द्र बुद्धि उद्देश्यों के विभिन्न पक्ष, ज्ञान के स्तर और पुर्नवलोकन को रचनावाद कहा जायेगा।
- ज्ञान अर्जित होता है। यह एक नैसर्गिक क्रिया है।
- रचनावाद में सीखना एक सक्रिय, सामाजिक एवं व्यक्तिगत प्रक्रिया है। इसमें सिखने वाला अपनी समझ का विकास करता है वह ज्ञानेद्रिय एवं अनुभव के आधार पर ही रचना करता है।
- कक्षा में रचनावादी दृष्टिकोण अपनाने में कक्षा का स्वरूप जीवित एवं गतिशील सक्रिय रहने में मदद मिल सकती है।
- रचनावाद विद्यार्थियों को खोज की दिशा प्रदान करता है, जिससे विद्यार्थी स्वयं सम्प्रदत्ययों का निर्माण कर सकेंगे। क्योंकि खोज जिंदगी में आने वाली समस्या के समाधान को प्रेरित करने में सहायता देता है।

- रचनावादी संकल्पना में विद्यार्थियों की अध्ययन में जिज्ञासा जागृत होती है। यह जिज्ञासा किसी बात का सतत आश्चर्य प्रश्न पूछने हेतु प्रोत्साहित करना, समूह कार्य देना, साथ ही कहीं बातों में ऐसा क्यों हुआ इसमें जिज्ञासा जागृत होगी तथा ज्ञान निर्मिती में विद्यार्थी को मदद मिल सकती है।
- समस्या निराकरण करते समय अध्ययन मे ज्ञान निर्मिती होती है उसमें सर्जनशील विचार व चिकित्सक विचार, समस्या के सतत चलने वाले चक्र, समस्या का शोध लेने हेतु अनेक दिशाओं से शोधक, काल्पनिक विचारों से विद्यार्थी समस्याँ का समाधान क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा कर सकेगा।
- अध्यापक ने विद्यार्थियों द्वारा स्वयं खोज की प्रवृत्ति का कक्षा में विकास करना चाहिए। ताकि छात्र विद्यार्थी उसकी व्याख्या करने के पहले उस विचार घटना का अनुभव दे सके।

❖ **श्रेणी पद्धति के बारे में प्रशिक्षित अध्यापकों की सोचः–**

श्रेणी पद्धति संबंध में CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की समझ निम्नलिखित है–

- श्रेणी पद्धत का स्वीकार करने से विद्यार्थी विद्यार्थी के बीच प्रगति की अनावश्यक तुलना कम होगी और वे खुद के प्रगती की खुद तुलना करेंगे।
- श्रेणी से पास–फेल खत्म होने से छात्रों के अंदर से फिसदी और नंबरों की गला काट प्रतिस्पर्धा पर लगाम लगने से शिक्षा में विशेषता परीक्षा में सुधार होकर स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता बढाने में सहायता मिल सकती है।
- श्रेणी पद्धति से विद्यार्थियों में कमिता, संकुचित भाव कम होने में सहायता मिलेगी। हम दूसरों से पिछे है की सोच परिवर्तन होकर विद्यार्थी शैक्षिक कार्य से दूर नहीं भागेगा।
- श्रेणी के नये सूत्र के अनुसार 90% से 100% तक 9 प्लाईट स्केल A_1 को एक्सेप्शनल 81% से 90% तक 8 प्वाईंट स्केल A_2 एक्सीलेंट,

71% से 80% तक 7 प्वाईट B_1 व्हेरी गुड, 61 से 70 तक 5 प्वाईट B_2 गुड, 51-60 तक 4 प्वांईट C_1 फेअर, 41 से 50 तक 3 प्वाईट C_2 एवरेज 33 से 40 तक 2 प्वाईट D बिलों एवरेज, 21 से 32 1 प्वाईट E_1 मीड़ इम्प्रुवमेंट, 0 से 20 तक E_2 अनसेटिसफाइड आदी श्रेणी का विभाजन करने से विद्यार्थियों में स्पर्धा कम होगी। साथ ही दो से ज्यादा विषयों में E_2 श्रेणी हासिल करने वाले विद्यार्थी फेल होगे।

परिकल्पना- 1

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत सतत एवं व्यापक मूल्यामापन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के लिंग के आधार पर सतत एवं व्यापक मूल्यामापन के समझ में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4.11

CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की CCE के प्रति समझ के मध्यमानों की तुलना।

लिंग	संख्या N	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD) σ	मुक्तांश (df)	टी मान 't'	परिणाम
अध्यापक	60	39.01	6.67	118	0.49	सार्थक अंतर नहीं
अध्यापिका	60	39.81	6.19			

N= 200

टी. तालिका परीशिष्ट II में आवृत्ति अंश का मान है।

0.05 पर 1.980

0.01 पर 2.617

उपरोक्त सारणी से यह ज्ञात होता है कि CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों का मध्यमान 39.01 एवं प्रमाणिक विचलन 6.67 है तथा अध्यापिकाओं का मध्यमान 39.81 एवं प्रमाणिक विचलन 6.19 है। इसका टी. मूल्य 0.49

है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के लिंग के आधार पर CCE के प्रति समझ में सार्थक अंतर नहीं है। यहां शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

❖ CCE प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापिकों की कठिनाईयाँ एवं गैरसमझ

- CCE मूल्यमापन की काफी जटील प्रणाली है।
- यह प्रणाली चार दिवसीय प्रशिक्षण में अच्छी प्रकार से समझ में नहीं आयी।
- प्रशिक्षण में तज्ञ मार्गदर्शक की कमी है।
- इस प्रणाली को कक्षा अध्ययन–अध्यापन के साथ जोड़ना कठिन है।
  - a) क्योंकि अधिगम के लिए समय कम मिलता है।
  - b) कक्षा अध्यापक को अधिक के कार्य करने पडते है।
  - c) कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होती है।
  - d) इसलिए हर एक विद्यार्थी के तरफ ध्यान देकर दैनिक मूल्यमापन करने में कठिनाई आती है।
  - e) विद्यार्थी कक्षा में नियमित उपस्थित नहीं रहते।
  - f) कक्षा में विद्यार्थियों को सहयोग की कमी का अनुभव से कठिनाईयाँ होती है।
- विद्यार्थियों का शैक्षिक एवं सहशैक्षिक मूल्यमापन करने हेतु विद्यालय में शैक्षिक साहित्य, साधन एवं तंत्रों की कमी होती है।
  - a) छात्रों के स्व अध्ययन हेतु अभ्यास कक्ष की कमी।
  - b) पुस्तकों की कमी
  - c) खेल साहित्य की कमी
  - d) मनोवैज्ञानिक परीक्षण साधन एवं तंत्रों की कमी
  - e) अभिभावक के सहयोग की कमी।

- पुस्तक सह परीक्षा (Open book test) से छात्र के निर्मित ज्ञान में कमी होती है।
- CCE प्रणाली में छात्रों को फेल न करने से मंद बुद्धि छात्रों को उपरी कक्षा में पढ़ते समय कठिनाई होती है।
- ऐसे विद्यार्थियों को उपक्रम चलाते समय कठिनाईयाँ आती है।
- प्रकल्प एवं उपक्रम देने से विद्यार्थियों को अध्ययन में समय की कमी होती है।
- श्रेणी प्रणाली के साथ अंक भी होने चाहिए।
- आवश्यक कार्य हेतु अध्यापकों को छुट्टी लेने से निर्माणात्मक मूल्यमापन में समस्यों उत्पन्न होती है।